सद्गुरुलक्ष्मणदेवस्य

अष्टोत्तरशत नामावली



ईश्वर आश्रम ट्रस्ट

गुप्तगंगा, निशात, श्रीनगर, कश्मीर

परिचय

भक्तों के विशेष अनुरोध पर सद्‌गुरु नामावली की रचना का उद्देश्य भक्तों की आध्यात्मिक साधना में सहायताहेतु है। लघुपुस्तिका रूप में इसका प्रकाशन केवल इसलिए है कि भक्तजन अपनी जेब में रखकर किसी भी समय, जब सुविधा हो, इसका पाठ कर सकें। विद्यार्थीवर्ग आवश्यकतानुसार इसका मनन करके मनोवांछित फल प्राप्त कर सकता है।

अष्टोत्तरशत नामावली

एवं

सद्गुरु आरती

रचयिता

प्रो० मखनलाल कुकिलू

प्रकाशक

ईश्वर आश्रम ट्रस्ट

गुप्तगंगा, निशात, श्रीनगर, कश्मीर

मूल्य : रु.५.००

सद्गुरुलक्ष्मणदेवस्य

अष्टोत्तर शत नामावली



ओं गुरवे नमः

ओं ईश्वरस्वरूपाय विद्महे

ईश्वराश्रमाय धीमहि

तन्नोऽमृतेश्वरः प्रचोदयात् ॥३॥

ध्यानम्

सहस्रदलपंकजे सकलशीतरश्मिप्रभं
वराभयकराम्बुजं विमलगन्धपुष्पाम्बरम्।
प्रसन्नवदनेक्षणं सकलदेवतारूपिणम्
स्मरेत् शिरसि संततं ईश्वरस्वरूपं लक्ष्मणम्॥

तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय



ईश्वरस्वरूपाय श्रीलक्ष्मणाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ १॥
नारायणाय काक आत्मजाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ २॥
'अरिणी' सुताय "कतिजी" प्रियाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ३॥
महताबकाकस्य शिष्योत्तमाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ४॥
श्रीरामदेवस्य च वल्लभाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ५॥
महादेवशैले कृतसंश्रयाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ६॥
मासि वैशाखे बहुले भवाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ७॥
एकाधिकेशतिथि सम्भवाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ८॥

शिष्यप्रियाय भयहारकाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ९॥
"लालसअब" नाम्ना उपकारकाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ १०॥
प्रद्युम्नपीठस्य महेश्वराय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ११॥
सर्वान्तरस्थाय भूतेश्वराय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ १२॥
अमराभिवन्द्याय अमरेश्वराय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ १३॥
ज्वालेष्टदेव्या हि दत्ताभयाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ १४॥
देवाधिदेवाय भवान्तकाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ १५॥
संवित्स्वरूपाय विलक्षणाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ १६॥

हृत्पद्मसूर्याय विश्रान्तिदाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ १७॥
समस्तशैवागम पारगाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ १८॥
प्रसन्नधामामृत मोक्षदाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ १९॥
रम्याय हृद्याय परन्तपाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ २०॥
स्तोत्राय स्तुत्याय स्तुतिकराय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ २१॥
आद्यन्तहीनाय नरोत्तमाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ २२॥
शुद्धाय शान्ताय सुलक्षणाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ २३॥
आनन्दरूपाय अनुत्तराय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ २४॥

अजाय ईशाय सर्वेश्वराय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ २५॥
भीमाय रुद्राय मनोहराय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ २६॥
हंसाय शर्वाय दयामयाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ २७॥
द्वैतेन्धनदाहक पावकाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ २८॥
मान्याय गण्याय सुभूषणाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ २९॥
शक्तिशरीराय परभैरवाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ३०॥
दानप्रवीराय गतमदाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ३१॥
मतेरगम्याय परात्पराय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ३२॥

धर्मध्वजायाति शुभङ्कराय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ३३॥
स्वामिन् गौतम गोत्रोद्भवाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ३४॥
मन्दस्मितेनाति सुखप्रदाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ३५॥
यज्ञाय यज्याय च याजकाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ३६॥
देवाय वन्द्याय भवप्रियाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ३७॥
सर्वत्र पूज्याय विद्याधराय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ३८॥
धीराय सौम्याय तन्त्रात्मकाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ३९॥
मन्त्रात्मरूपाय दीक्षाप्रदाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ४०॥

संगीतसाराय गीतिप्रियाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ४१॥
प्रत्यक्षदेवाय प्रभाकराय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ४२॥
अनघाय अज्ञान विध्वंसकाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ४३॥
सिद्धिप्रदाय बन्धुरर्चिताय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ४४॥
अक्षरात्मरूपाय प्रियव्रताय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ४५॥
लावण्यकोषाय मदनान्तकाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ४६॥
अमितायानन्ताय भक्तप्रियाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ४७॥
सोऽहंस्वरूपाय हंसात्मकाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ४८॥

उपाधिहीनाय निराकुलाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ४९॥
राजीवनेत्राय धनप्रदाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ५०॥
गोविन्दरूपाय गोपीधवाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ५१॥
नादस्वरूपाय मुरलीधराय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ५२॥
बिसतन्तुसूक्ष्माय महीधराय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ५३॥
राकेन्दुतुल्याय सौम्याननाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ५४॥
सर्वज्ञरूपाय च निष्क्रियाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ५५॥
चितिस्वरूपाय तमोपहाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ५६॥

आबालवृद्धान्त प्रियंकराय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ५७॥
जन्मोत्सवे सर्वधनप्रदाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ५८॥
षडर्धशास्त्रस्य च सारदाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ५९॥
अध्वा अतीताय सर्वान्तगाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ६०॥
शेषस्वरूपाय सदातनाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ६१॥
प्रकाशपुञ्जाय सुशीतलाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ६२॥
निरामयाय द्विजवल्लभाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ६३॥
कालाग्निरुद्राय महाशनाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ६४॥

अभ्यासलीनाय सदोदिताय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ६५॥
त्रिवर्गदात्रे त्रिगुणात्मकाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ६६॥
प्रज्ञानरूपाय अनुत्तमाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ६७॥
ईशानदेवाय मयस्कराय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ६८॥
कान्ताय त्रिस्थाय मनोमयाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ६९॥
हृत्पद्मतुल्याय मृगेक्षणाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ७०॥
सर्वार्थदात्रेऽपि दिगम्बराय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ७१॥
तेजस्स्वरूपाय गुरवे शिवाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ७२॥

कृतागसां द्राक् अघदाहकाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ७३॥
बालार्कतुल्याय समुज्वलाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ७४॥
सिन्दूर लाक्षारुण आननाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ७५॥
सर्वात्मदेवाय अनाकुलाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ७६॥
मातृ प्रमेय प्रमाणमयाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ७७॥
रसाधिपत्याय रहःस्थिताय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ७८॥
उपमाविहीनाय उपमाधराय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ७९॥
स्वातन्त्र्यरूपाय स्पन्दात्मकाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ८०॥

अभिनवगुप्ताय काश्मीरिकाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ८१॥
संकोचशून्याय विभूतिदाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ८२॥
स्वानन्दलीलोत्सव संरताय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ८३॥
मालिनीस्वरूपाय मातृकात्मकाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ८४॥
धर्मपददर्शन दीपकाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ८५॥
सायुज्यदात्रे परभैरवाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ८६॥
पादाब्जदीप्त्याऽपहतमलाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ८७॥
समस्तदैन्यादि विनाशकाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ८८॥

महेश्वराय जगदीश्वराय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ८९॥
खस्थाय स्वस्थाय निरंजनाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ९०॥
विज्ञानज्ञानाम्बुभिः शान्तिदाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ९१॥
गुरवे मदीयाय मोक्षप्रदाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ९२॥
शिवावताराय च दैशिकाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ९३॥
अनादिबोधाय संवित्घनाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ९४॥
आचार्य शंकर गिरेः शिवाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ९५॥
परभैरवधाम्नि, कृतसंश्रयाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ ९६॥

भैरवरूपाय श्रीलक्ष्मणाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय।। ९७।।
खेदिग्गोभूवर्ग चक्रेश्वराय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय।। ९८।।
स्वच्छन्दनाथाय मम पालकाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय।। ९९।।
अमृतद्रवाय अमृतेश्वराय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय।। १००।।
यज्ञस्वरूपाय फलप्रदाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय।। १०१।।
नानदत्त आत्रेय पुत्रीसुताय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय।। १०२।।
सत्याय नीलोत्पल लोचनाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय।। १०३।।
भवाब्धिपोताय सुरेश्वराय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय।। १०४।।

शिवस्वभावं ददते नराय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ १०५॥
विद्याशरीराय विद्यार्णवाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ १०६॥
मूर्धन्यदेवाय सकलप्रदाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ १०७॥
योगीन्द्रनाथाय सदाशिवाय।
तुभ्यं नमामि गुरुलक्ष्मणाय॥ १०८॥

यः पठेत् प्रयतो भक्तः जपेत् वा गुरुसन्निधौ।
गुरोः नामावली नित्यं गुरुस्तस्मै प्रसीदति॥
गुरोर्माहात्म्य मालेयं सर्वताप निवारिका।
गुम्फिता गुरुदासेन पिकेन ह्यनुरोधतः॥

जय गुरुदेव।



आरती गुरुदेव की

जय गुरुदेव हरे जय जय गुरुदेव हरे,
मम सद्‌गुरु श्रीलक्ष्मण क्षण में कष्ट हरे।।१।।
सबलक्षण सुन्दर तू सर्वसंकट हारी।
अन्तस्तमहर्ता तू भव अर्णव तारी।।जय०।।२।।
सौम्यमूर्ति तू साजे अवहितजन ध्यावे।
भुक्ति-मुक्ति के दाता मांगत कर जोरे।।जय०।।३।।
जिस दिन तुझको पाया निखर उठी काया।
भव-बन्धन सब बिखरे हरली मम माया।।जय०।।४।।
हे मम सद्‌गुरु! हर लो दुष्कृत जन्मों के।
मेरे पालनकर्ता द्वार पड़ा तेरे।।जय०।।५।।
मल मेरे सब काटो हृदयकमल विकसे।
अन्तस्त्रय मेरा नित तुझ में लीन रहे।।जय०।।६।।
श्रीगुरुपद से जन्मे धूल से भाल सजे।
विधि के कलुषित अक्षर विनशे हिम जैसे।।जय०।।७।।

तनमन सौंपूं तुझको हे सद्गुरु प्यारे।
नाम स्मरण जप में नित, रहूं मगन तेरे।।जय०।।८।।
मैं बुद्धिहीन हूं चंचल तन मेरा निर्बल।
एकबार अपनाओ जन्म सफल होवे।।जय०।।९।।
श्रीलक्ष्मण गुरुदेव की आरती जो गावे।
वह शिवभक्त निःसंशय शिवसम हो जावे।।जय०।।१०।।
जय गुरुदेव हरे जय जय गुरुदेव हरे।
मम सद्गुरु श्री लक्ष्मण क्षण में कष्ट हरे।।

